साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695

Volume 02 Issue 8

August 2016

पिछड़े वर्ग की स्त्रियाँ और उनका नारकीय जीवन

सपना मांगलिक

साहित्यकार, एफ -६५९ कमला नगर आगरा २८२००५

९५४८५०९५०८ email- sapna8manglik@gmail।com

यूँ तो हमारे देश के हर वर्ग की स्त्री के तन,मन एवं आत्मा पर इस पुरुष प्रधान समाज की बेड़ियों के कई घाव असंख्य छाले हमे देखने को मिल जायेंगे मगर एक तो स्त्री और वो भी दलित तो उन घावों और छालों की गणना करना ही व्यर्थ होगा क्योंकि दलित स्त्री की व्यथा भी अपरिमित है और तन मन पर पड़े जख्म भी । हमारे देश में धर्म के ठेकेदारों ने पिछले सेंकडों वर्षों से ऐसे ऐसे बेहूदा नियम और रिवाज बनाये हैं जिन्होंने दलित ,आदिवासियों और अल्पसंख्यकों का जीवन नरक से भी बदतर बना रखा है ।सेंकडों वर्षों से सवर्णों के अत्यचार सहते एवं उनकी गुलामी करते दलितों ने अब इसी अत्याचार और शोषण को अपनी नियति मान घुटने टेक दिए हैं ।मगर सवाल यह उठता है कि क्या प्रजातंत्र में इस तरह का भेदभाव और छुआछूत या शोषण को जगह मिलनी चाहिए ?आज भी हरिजन ही मैला क्यों धोये कोई सवर्ण क्यों नहीं ?बाकी नौकरियों के लिए आवेदन मंगाए जाते हैं इंटरव्यू लिए जाते हैं फिर गंदगी की ढोने का जिम्मा दलित का ही क्यों ?जूते चर्मकार ही क्यों करें कोई अन्य जाती का मजदूर क्यों नहीं ,बढ़ई ही लकड़ी क्यों घिसे ,कसाई ही बूचरखाने पर काम क्यों करे ?धोबी ही कपडे ढोने का कार्य क्यों करे ?पूर्व में हमारे देश के इन मेहनती कामगारों को उनके कार्य को मद्देनजर रखते हुए कई श्रेणियों में बाँट दिया गया ।अशिक्षित होने के कारण ये कामगार भी अपने वंशजों को खाने और आजीविका चलाने के लिए यही कार्य सिखाते गए ।फिर धर्म के ठेकेदारों ने इन विभिन्न श्रणियों के कामगारों को उनके कार्य के हिसाब से जातियों में विभक्त कर दिया और इन जातियों को दर्जा मिला दलित का और इसके बाद भी कुछ निम्न तबके के लोग जो दूर दराज में बच गए उन्हें आदिवासीयों जन जातियों में रखा गया ।उसके बाद शुरू हुआ इन दलितों आर आदिवासियों के शोषण का सिलसिला ।जो अब तक कायम है ।दलित समुदाय में पैदा हुए बच्चे के लिए अत्याचार उसकी किस्मत बन जाता है ।जिससे उसे मरते दम तक जूझना और खून के आंसू पी पीकर झेलना है ।उसे सवर्णों की भांति मन्दिर में जाने का अधिकार नहीं ,उसे सवर्णों के घर के आगे से चप्पल पहन कर निकलने का नहीं अपितु सर पर रखकर चलने की अनुमति दी गई,उसके हाथ अगर सवर्ण की किसी वास्तु को छू भी जाएँ तो उसे मार मारकर अधमरा कर दिया जाता है ,वो प्यास से मर भले ही जाए मगर उसे ऊँची जाती के नल से पानी पीने का अधिकार नहीं ,नाइयों के यहाँ बाल कटवाने का भी अधिकार उस दलित को नहीं क्योंकि सवर्ण उस जगह उन वस्तुओं को अपने शरीर पर कैसे लगा सकते हैं जो दलित से स्पर्श हो गयी हो ?होटल में खाना खाने की हसरत पर अपमानित कर सरेआम सड़कों पर घसीट कर कुत्ते की तरह पीटा जाता है ।बहुत ही हास्यापद बात है कि हम जानवरों को अपने बिस्तर पर सुला सकते हैं ,गोद में पुचकार सकते हैं गाड़ियों में घुमा सकते हैं मगर जहाँ

दलित का बच्चा अगर खेलते खेलते आपसे छू जाए तो आप लात मारकर दुत्कार देते हो गंदी गंदी जाती सूचक गालियों से उसका आत्मविश्वास ,मान सम्मान और कलेजा छलनी -छलनी कर देते हो ।स्वतंत्रता के साठ वर्ष बाद भी दलित की स्तिथि भारतीय समाज में वैसी ही है जैसी बाबा साहेब अंबेडकर के समय हुआ करती थी । ऐसा नहीं है कि यह अत्याचार सिर्फ अशिक्षित दलितों के साथ ही किये जाते हैं जो दलित पढ़ लिखकर ऊँचे ओहदे की भी नौकरी या व्यवसाय करते हैं वो भी यह जानते हैं कि कैसे उनके मातहत फाइलों को उनके हाथ में न देकर टेबल पर फैंक देते हैं ,पदोन्नति के लिए पहली पसंद कौन होता है ?।वास्तव में दलित समुदाय के पुरुषों का जितना शोषण और अत्याचार होता है उससे भी कई गुना ज्यादा उनकी औरतों और बच्चियों को अत्याचार सहना पड़ता है । देश में हर दिन कहीं न कहीं दलितों और आदिवासियों की लड़कियों के साथ गैंग-रेप किये जा रहे हैं। दलितों और आदिवासियों का सार्वजनिक रूप से उत्पीड़न किया जाता है। कभी बलात्कार करने में असफल होने पर दलितों और आदिवासियों की पीड़ित औरतों को विरोध करने के कारण जिन्दा जला दिया जाता है। उनको अमानवीय त्रासदियॉ दी जाती हैं। सवर्ण पुरुष के दैहिक अत्याचार के विरुद्ध मुंह खोलने पर सरेआम नग्न घुमाया जाता है उसके निजी अंगों में मसाले और सख्त वस्तुएं डाल अमानवीयता की पराकाष्ठा को पार कर दिया जाता है ।और हालात यह हैं कि इस नारकीय जीवन के विरुद्ध इस शोषण के विरुद्ध आवाज न उठाकर अब ये दलित स्त्रियाँ इसी शोषण को अपना जीवन मान चुकी हैं।आइये देखते हैं कुछ दलित जातियों की स्त्रियों का जीवन और वर्तमान स्तिथि -

राजस्थान के भरतपुर जिले के गाँव मलाहा और पंक्षी का नगला में निवास करने वाली बेदिया जाती की स्त्रियों से उनके घर के पुरुष दैहिक व्यापार करवाते हैं और उनकी नुची खुची देह से प्राप्त पैसे से अपने घर के और शराब के खर्चे निकालते हैं ।जो स्वर्ण दलितों को छूना पाप समझते हैं उनकी लाइनें इन इलाकों के हर घर के पास लगी मिल जायेंगी ।इन गाँवों को तवायफों का गाँव तक कहा जाता है ।बेदिया जाती के लोगों का यह व्यंग्य दिल को चुभता है कि ऊंची जाति के लोग जान-बूझकर हमारे बच्चों के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार करते हैं और हमारी ही बिरादरी की लड़कियों के साथ सोने के लिए लाइन लगाते हैं। अपनी बच्चियों से जान बूझकर देह व्यापार करवाने के सन्दर्भ में उनका यह तर्क कि जब तक उनकी बिरादारी की खूबसूरत लड़कियों को सेक्स से बढिय़ा आमदनी हो रही है, तभी तक उनके परिवार को भोजन और आमदनी प्राप्त हो रही है। इसे बंद करने पर उनके भूखों मरने की नौबत आ जायेगी ,वास्तव में शर्मनाक है ।अब राजस्थान से निकल गुजरात कि ओर चलते हैं ,गुजरात की राजधानी गाँधीनगर से क़रीब 250 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह गुजरात के बांसकांठा ज़िले का वाडिया गाँव है। इसे यौनकर्मियों के गाँव के तौर पर जाना जाता है। इस गाँव में पानी का कोई कनेक्शन नहीं है, कुछ ही घरों में बिजली की सुविधा है, स्कूल, बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएँ और सड़कें तक नहीं हैं। वाडिया गाँव बीते कई दशकों से देह व्यापार से जुड़ा हुआ है। गाँव के ज़्यादातर मर्द दलाली करने लगे हैं और कई बार उन्हें अपने परिवार की औरतों के लिए खुलेआम ग्राहकों को फंसाते हुए देखा जा सकता है। इस गाँव के बाशिंदे ज़्यादातर यायावर जनजाति के हैं। इन्हें सरनिया जनजाति कहा जाता है।माना जाता है कि ये राजस्थान से गुजरात आए थे। दस वर्ष की बच्चियों से धंधा करवाने की शुरुआत उसके पचास वर्ष तक का होने पर भी नहीं थमती ।हाँ उनकी देह को रोंदने की वारम्वारता अवश्य कम हो जाती है ।"वाडिया में कई ऐसे घर हुआ करते थे और अब भी हैं, जहाँ माँ, माँ की माँ और बेटी तीनों के ही ग्राहक एक ही घर में एक ही वक़्त में

ISSN 2454-2695

Volume 02 Issue 8

August 2016

आते हैं।" "वाडिया की औरतों के लिए यौनकर्मी बनने के अलावा कोई और उपाय नहीं रहता है।उन्हें कोई काम भी नहीं देता है। अगर कोई काम दे भी देता है तो वह सोचता है कि वह दलित औरतें उसे काम के बदले ख़ुद को सौंप देंगे।"वाडिया गाँव हो या मलाहा या फिर पंक्षी का नगला यहाँ शादी जैसी कोई परंपरा नहीं है। यहाँ का कोई भी बच्चा अपने बाप का नाम नहीं जानता। ज़्यादातर लड़कियों का जन्म ही सेक्स वर्कर बनने के लिए होता है और मर्द दलाल बन जाते हैं। इन गाँवों में पैदा होने वाली लड़कियां वेश्यावृत्ति के धंधे को अपनाने के लिए एक तरह से अभिशप्त हैं।साफ़ सफ़ाई जैसी कोई चीज़ इस गाँव में नहीं दिखाई देती लेकिन ये वो विकास नहीं हैं, जो इस गाँव की औरतें चाहती हैं। वे ऐसी ज़िंदगी की तलबगार हैं जिसमें उन्हें किसी दलाल या ख़रीदार की ज़रूरत न पड़े। इन देह व्यापार में रत औरतों को सबका साथ सबका विकास और बेटी बचाओ बेटी पढाओ जैसी परियोजनाओं से कोई लेना देना नहीं है ।भारत के विकास की कहानी का इन औरतों के लिए केवल एक ही मतलब है कि अब उनके ज़्यादातर ग्राहक कारों में आते हैं। राजस्थान ,गुजरात के बाद चलते हैं पश्चिम बंगाल की ओर जहाँ भगवान जैसे निर्जीव चीज की सेवा करने के नाम पर पुजारियों और मठाधिशों की सेवा के लिए शुरू की गई 'देवदासी प्रथा' घोषित रूप से भले ही समाप्त हो गई हो, लेकिन देवदासियां आज भी हैं। देवदासी हिन्दू धर्म में ऐसी स्त्रियों को कहते हैं, जिनका विवाह मन्दिर या अन्य किसी धार्मिक प्रतिष्ठान से कर दिया जाता है। समाज में उन्हें उच्च स्थान प्राप्त होता है और उनका काम मंदिरों की देखभाल तथा नृत्य तथा संगीत सीखना होता है। परंपरागत रूप से वे ब्रह्मचारी होती हैं, पर अब उन्हे पुरुषों से संभोग का अधिकार भी रहता है। यह एक अनुचित और गलत सामाजिक प्रथा है। इसका प्रचलन दक्षिण भारत में प्रधान रूप से था। बीसवीं सदी में देवदासियों की स्थिति में कुछ परिवर्तन आया। पेरियार तथा अन्य नेताओं ने देवदासी प्रथा को समाप्त करने की कोशिश की। कुछ लोगों ने अंग्रेजों के इस विचार का विरोध किया कि देवदासियों की स्थिति वेश्याओं की तरह होती है। कुछ दिनों पहले मैंने किसी न्यूज़ चैनल पर वेल्लोर की खबर चलते देखी। खबर कुछ ऐसी थी कि 12-13 साल की बच्चियों को देवदासी चुना गया और उन्हें अगले कुछ सालों तक देव और देवियों यानी भगवान की सेवा में अपना जीवन व्यतित करना है। समाज में इन बालिकाओं का दर्जा जरुर कुछ श्रेष्ठ हो जायेगा, पर देवदासी प्रथा के तहत उनकी आज़ादी छिन चुकी है, इस बात से अनजान ये बच्चियां सिर्फ इस बात से खुश थीं कि अब उन्हें मंदिर की स्वामिनी का दर्जा और देखरेख का अधिकार प्राप्त हो गया है। वहां रहने के दौरान वस्त्र और अच्छा खाना खाने को मिलेगा, साथ ही उस गरीबी से भी छुटकारा भी मिलेगा, जिसके साथ वह पैदा हुई हैं। कमर के उपरी हिस्से तक निर्वस्त्र इन बच्चियों के सर पर मटकियां रख कर जुलुस भी निकाला जाता है । भीड़ का नेतृत्व करती इन किशोरियों का बालमन जब परिपक्व होगा, बढ़ती उम्र और मातृत्व की लालसा चरम पर होगी और ये यादें साथ होंगी, तो क्या वो एक सम्मानित जीवन की नीव रख पाएंगी? कैसे जी पाएंगी वो इन कड़वी यादों के साथ? दूसरी ओर एक खुशहाल जिंदगी न मिल पाने पर, समाज द्वारा नकार दिए जाने पर क्या वेश्यावृति की ओर इनके कदम नहीं मुडेंगे? न चाहते हुए भी उन्हें वेश्यावृति के गहरे दलदल मे ढकेल दिया जाएगा।आज भी कहीं वैसवी, कहीं जोगिनी, कहीं माथमा तो कहीं वेदिनी नाम से देवदासी प्रथा देश के कई हिस्सों में कायम है। कर्नाटक के 10 और आंध्र प्रदेश के 14 जिलों में यह प्रथा अब भी बदस्तूर जारी है। देवदासी प्रथा को लेकर कई गैर-सरकारी संगठन अपना विरोध दर्ज करा चुके हैं। इन

ISSN 2454-2695
साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
Volume 02 Issue 8
August 2016

संगठनों का मानना है कि अगर यह प्रथा आज भी बदस्तूर जारी है, तो इसकी मुख्य वजह इस कार्य में लगी महिलाओं की सामाजिक स्वीकार्यता है। इससे बड़ी समस्या इनके बच्चों का भविष्य है। ये ऐसे बच्चे हैं, जिनकी मां तो ये देवदासियां हैं, लेकिन जिनके पिता का कोई पता नहीं है। कई स्थानों पर तो दलित महिलाओं पर जादू-टोटा करने के या डायन होने के झूठे बेसिर पैर के आरोप लगाकर उनके ही गाँव के लोग गेंग्रेप करते हैं निर्वस्त्र गाँव में घुमाते हैं और जूते ,चाबुकों से उनकी ताबड़तोड़ पिटाई कर अधमरा कर देते हैं । अभी हाल में ही सरकारी सिपाहियों द्वारा गाँव की आदिवासी लड़कियों पर नक्सली होने का इलज़ाम लगाया गया दरअसल वहां यह धारणा थी कि लड़की अगर अविवाहित है तो हो सकता है वो नक्सली हो और इस धारणा का कामुक फायदा सिपाहियों द्वारा स्त्री शोषण के लिए किया जाता है । सिपाहियों द्वारा हाल की ही घटना में उन्हें उनके स्तन निचोड़कर यह साबित करने को कहा गया कि वह शादीशुदा हैं ,लड़कियों ने जब विरोध किया तो जबरन सिपाहियों ने उनके कपडे हटा उनके अंगों से खिलबाड़ किया ।

संक्षेप में दलित स्त्रीजाति के बाण से हर प्रकार घायल होती है, वह अपने दलित होने की सजा हमेशा पाती है। एक तरफ उसे दलित समझकर उसको उपभोग की वस्तु समझा जाता है तो दूसरी और उसको सबसे ज्यादा सामाजिक हिंसा का शिकार होना पडता है। सवर्ण समाज के स्त्री पुरुष दोनों ही उसको तरह तरह से उत्पीड़ित करते है। वह जीवन के प्रत्येक स्तर पर जातीय भेदभाव, धार्मिक पाखंड तथा अंधविश्वास झेलती है।दलित औरतों का किस प्रकार यौन शोषण किया जाता है, उनकी गरीबी का, उनके देह का इस्तेमाल किस कदर किया जाता है,यह सोचनीय है कि छूआछूत मानने वाला वह ब्राह्मण जिसकी किसी दलित की छाया पड़ने मात्र से ही जात चली जाती है, उसी ब्राह्मण का दलित स्त्री के साथ जबर्दस्ती शारीरिक संबंध बनाने से, उनका चुंबन लेने से जाति नही जाती है। पुरुष कामगारों से भी अधिक स्त्री मजदूर कामगारों की हालत खराब होती है। ना उन्हे मजदूरी ठीक से मिलती है और ना ही एक कामगार के बराबरी का रुतबा और ना ही सम्मान । अकाल, भूख, गरीबी, अभाव की मार सबसे ज्यादा गरीब दलित तबके की स्त्री को ही झेलनी पड़ती है।ऐसे में वह घर से लेकर बाहर तक शोषण अन्याय उत्पीड़न की चक्की मे रात-दिन पिसती है। ऐसी ही परिस्थितियां झेल रही हमारी श्रमिक महिलाएं इस दोगले समाज से सवाल करने का हक रखती हैं कि जिस प्रकार वह कड़ी धूप में जब मिट्टी तोड़ रही है, उसके पास इतनी मेहनत करने के बाद भी ना पहनने को पूरे कपड़े हैं और ना ही भूख मिटाने का खाना। तब किस विकास की बात यह देश कर रहा है और कौनसी खुशहाली इस देश में आ रही है ?संसद में महंगाई और भृष्टाचार पर कुर्सी मेज फैंके जाते हैं ,चीख चीखकर सरकार विपक्ष को और विपक्ष द्वारा सरकार को कोसा जाता है मगर देश की सबसे बड़ी समस्या जो कि देश की अड़तालीस फीसदी महिला आबादी को वास्तव में सम्मान, संवैधानिक समानता, सुरक्षा ,दलितों, आदिवासियों और स्त्रियों को हर दिन धर्म के नाम पर अपमानित, शोषित और उत्पीड़ित किया जाना। और हर क्षेत्र में पारदर्शी न्याय प्रदान करने पर किसी का ध्यान नहीं जाता । आज हमारे देश में यदि सबसे सबसे बड़ी सजा का हकदार कोई अपराधी हैं तो वे सभी हैं, जो दलितों, आदिवासियों और स्त्रियों के साथ खुलेआम भेदभाव, अन्याय, शोषण, उत्पीड़न कर रहे हैं और जिन्हें धर्म और संस्कृति के नाम पर जो लोग और संगठन लगातार सहयोग प्रदान करते रहते हैं।वास्तव में

ISSN 2454-2695

Volume 02 Issue 8

August 2016

भ्रष्टाचार हमारे देश की सबसे बड़ी समस्या नही है बल्कि जातिवाद देश की सबसे पुरानी और मूल समस्या है और जब तक देश से जातिवाद को खत्म नहीं किया जाएगा तब तक इस देश की स्त्रियाँ इसी तरह का नारकीय जीवन जीती रहेंगी अपने स्त्री होने पर आंसू बहाती रहेंगी ,खुद को कोसती रहेंगी और अपनी देह को मन को आत्मा को सवर्णों द्वारा या अपनी ही जाती के पुरुषों द्वारा रोंदने और कुचलने को विवश हो परोसती रहेंगी ।

-0-